Question N.O-1:— मानव भूगोल को परिभाषित करते हुऐ इसके विषय क्षेत्र को लिखिए !

Answer:→ प्राकृतिक वातावरण से मानव कितना प्रभावित होता है अथवा स्वयं मानव इस वातावरण को किस प्रकार प्रभावित करता है, यह विषय भूगोल क्षेत्र में विशेष महत्व प्रदान करता है। भू प्रकट की बनावट, जलवायु, जलाशय, वनस्पति और विभिन्न शीर्षकों का अध्ययन करते हुऐ लाभ-हानि की दृष्टि से मानव को ही विषयों का केन्द्र माना गया है।

मानव भूगोल का विकास का श्रीगणेश उन्नीसवी शताब्दी में हुआ। इस शताब्दी में भूगोलवेत्ताओं का जन्म हुआ जिन्होंने मानव भूगोल का उत्थान एवं विकास के लिये अपना जीवन न्योछावर किया। वर्तमान मानव भूगोल के जन्मदाता फ्रेडरिक रेटजेल हैं। इनका प्रमुख ग्रन्थ एन्थ्रोपोजोग्राफी (Anthropogeography) था। इस पुस्तक का केन्द्र बिन्दु मानव था और वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया।

रैटजेल के अनुसार— "मानव सर्वत्र वातावरण से सम्बंधित होता है जो स्वयं भौतिक दशाओं का योग है"

विडाल डि ब्लाश के अनुसार— इस फ्रांसीसी वैज्ञानिक ने मानव भूगोल को एक विज्ञान स्तर पर रखा उन्होंने इस विषय को विस्तार पूर्वक अपनी पुस्तक प्रिंसिपल डी ज्योग्राफी ह्यूमेन 1923 में लिखा— "मानव भूगोल विचारों के विकास की अभिव्यंजना है, न कि भौगोलिक ज्ञान के विस्तार और खोज का कोई तात्कालिक परिणाम।"

ब्रून्श के अनुसार :— फ्रांसीसी विद्वान और ब्लाश के शिष्य प्रो० जीन ब्रुश के अनुसार— "मानव भूगोल उन सभी तथ्यों का अध्ययन है जो मानव के क्रियाकलापों से प्रभावित है और जो हमारी पृथ्वी के धरातल पर घटित होने वाली घटनाओं में से छाटकर एक विशेष श्रेणी में रखे जा सकते है।"

Scanned with CamScanner

कुमारी सेम्पल के अनुसार :- रैट जल की शिष्या सेम्पल ने अपनी पुस्तक 'इन्फ्लुएन्स ऑफ ज्योग्राफिक एनवाइरनमेंट (1911) में पृथ्वी और मानव दोनों को ही भूगोल का विषय माना उन्होंने मानव भूगोल की व्याख्या इस प्रकार की है- " मानव भूगोल क्रियाशील मानव और अस्थायी पृथ्वी के परिवर्तनशील सम्बंधों का अध्ययन है।"

डिमांजिया :- इस फ्रांसीसी वैज्ञानिक ने फ्रांस के गाँव में जीवन का प्रगाढ़ रूप से अध्ययन किया, यहाँ के मानव जीवन पर प्राकृतिक वातावरण का अटूट सम्बन्ध देखा इन्होंने प्रोब्लम्स डी ज्योग्राफी ह्यूमैन (1952) में नामक पुस्तक लिखी।

मानव भूगोल के क्षेत्र (Scope of Human Geography)

पृथ्वी के विभिन्न भागों के निवासियों- उनके रंग-रूप, स्वरूप, स्वास्थ्य, कार्यक्षमता, भोजन, वेश-भूषा, आजीविका के साधन, गृह-निर्माण, भाषा, रीति-रिवाज, धार्मिक भावनाएं, राजनीतिक विचार धाराएं, व्यवस्था, संस्कृति आदि में बड़ा अन्तर पाया जाता है। इस अन्तर के अनेक कारण हैं इसमें से कुछ मानव के प्राकृतिक वातावरण और मानव के अपने नृवंशीय या जातीय गुणों से सम्बंधित होते हैं तो कुछ इसकी संस्कृति से। ज्यों-ज्यों मानव अधिक सभ्य होता जाता है, उसके जीविको पाजन की क्रियाएं भी परिवर्तित, अधिक व्यवस्थित एवं विविध होती जाती है। इन क्रियाओं को क्रियान्वित करने के लिए वह भौतिक वातावरण में परिवर्तन करता है उसके साथ सामंजस्य स्थापित करता है। इसके साथ-साथ मानव स्वयं की कार्यक्षमता, स्वास्थ्य, भोजन, आर्थिक क्रियाएं और रीति-रिवाजों पर वहाँ के भौतिक वातावरण का भी अमिट प्रभाव पड़ता है।

Scanned with CamScanner

हंटिंगटन के अनुसार मानव भूगोल का क्षेत्र :→

विश्व विख्यात अमेरिकन विद्वान एल्सवर्थ हंटिंगटन ने मानव भूगोल के अध्ययन क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसका विस्तृत विवरण उन्होंने Principles of Human Geography में दिया है।

हंटिंगटन ने मानव भूगोल के विषय क्षेत्र को नीचे दिये गये विशेष चार्ट द्वारा समझाया है। उनके अनुसार यह दो भागों में वर्गीकृत किया है — **(A) भौतिक दशाएँ (B) मानवीय अभिव्यंजना।**

हंटिंगटन के अनुसार मानव भूगोल का क्षेत्र

(A) भौतिक दशाएँ
1. ग्लोब पर स्थिति
2. भूमि की रचना
3. जल राशियाँ
4. मिट्टी एवं खनिज पदार्थ
5. जलवायु

↔

(क) पौधे
(ख) पशु

जीवन के रूप
- (क) आवश्यक या भौतिक आवश्यकताएं
- (ख) मूल व्यवसाय
- (ग) कार्य कुशलता
- (घ) उच्च आवश्यकताएं

(B) मानव अभिव्यंजना
1. भोजन और जल
2. वस्त्र
3. गृह
4. औजार
5. यातायात के साधन
6. शिकार करना
7. मछली पकड़ना
8. पशुचारण
9. खेती करना
10. लकड़ी काटना
11. खाने खोदना
12. उद्योग धन्धा
13. व्यापार वाणिज्य
14. स्वास्थ्य सेवाएं
15. सांस्कृतिक प्रेरणा
16. आमोद प्रमोद
17. सरकार
18. शिक्षा
19. विज्ञान
20. धर्म
21. कला इत्यादि

A भौतिक दशाएँ :- के अन्तर्गत (1) पृथ्वी के ग्रह सम्बन्ध आधार उसकी स्थिति, उसका स्वरूप और आकार (2) स्थल स्वरूप एवं संरचना (3) जलाशय (4) मिट्टियाँ और खनिज तथा (5) जलवायु सम्मिलित है। इस श्रेणी के जीव स्वरूप को भी सम्मिलित किया गया है। इसकी तीन श्रेणियाँ बनाई गई है— (1) पौधे (2) पशु (3) मनुष्य।

B मानवीय अभिव्यंजना :- इसके अन्तर्गत —(1) प्राथमिक एवं भौतिक आवश्यकताएँ — भोजन, जल वस्त्र, सुरक्षा, औजार और यातायात के साधन (2) मूल या मुख्य व्यवसाय — शिकार करना, मछली पकड़ना, पशु चराना, खेती करना, लकड़ी काटना, खानें खोजना, निर्माण एवं व्यापार (3) चतुर्थ या क्षमता - पैतृक देन, स्वास्थ्य एवं सांस्कृतिक प्रेरणा (4) अन्य आवश्यकताएँ — आमोद प्रमोद, सरकार, शिक्षा, विज्ञान, धर्म, कला, साहित्य आदि सम्मिलित किये जाते है।

प्रो० ब्रून्श का मानव भूगोल का क्षेत्र

प्रो० ब्रून्श ने मानव भूगोल की आवश्यक विषय सामग्री के दो आधारों पर वर्गीकृत किया है -(A) सभ्यता के आधार पर (प्राथमिक आवश्यकताएँ पर आधारित है) के आधार प (B) सर्वात या धनात्मक वर्गीकरण (जो सांस्कृतिक तथ्यों पर आधारित है) के आधार प

(A) सभ्यता के विकास के आधार पर

जीवन निर्वाहन के लिए मानव की आर्थिक आवश्यकताएं →	(1) भोजन (2) वस्त्र (3) आवास (4) संतानोत्पत्ति प्रवृति →	1. स्थिति 2. स्थलस्वरूप 3. जलवायु 4. मिट्टी 5. प्राकृतिक वनस्पति 6. पशु जीवन 7. खनिज पदार्थ 8. शक्ति के स्रोत 9. जल →	1. शिकार करना 2. मछली पकड़ना 3. पशुपालन 4. कृषि कार्य 5. खानें खोदना 6. निर्माण उद्योग 7. वाणिज्य व्यापार 8. समाज एवं परिवार 9. शासन राजनीति

Scanned with CamScanner

(5) मर्मात या धनात्मक वर्गीकरण (जो सांस्कृतिक तथ्यों पर आधारित है)

1. स्वास्थ्य
2. आमोद प्रमोद
3. धार्मिक भावनाएं
4. शिक्षा
5. विज्ञान
6. कला प्रदर्शन →
7. प्रशासन
8. राष्ट्र
9. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंध
10. सामाजिक विकास
11. सहयोग
12. सद्भावना
13. साहित्य विकास

1. धर्म
2. शिक्षा
3. विज्ञान
4. कला
5. दर्शन
6. शासन →
7. समाज
8. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंध
9. व्यापार
10. जन सम्पर्क
11. उद्योग
12. नगर
13. मार्ग

1. धर्म प्रचार
2. शिक्षा प्रसार
3. विज्ञान प्रचार
4. कला प्रसार
5. शासन सुधार
6. समाज सुधार
7. अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग
8. व्यापार
9. परिवार नियोजन
10. उद्योगों का विकास
11. नगरों का आयोजन
12. मार्गों का प्रसार

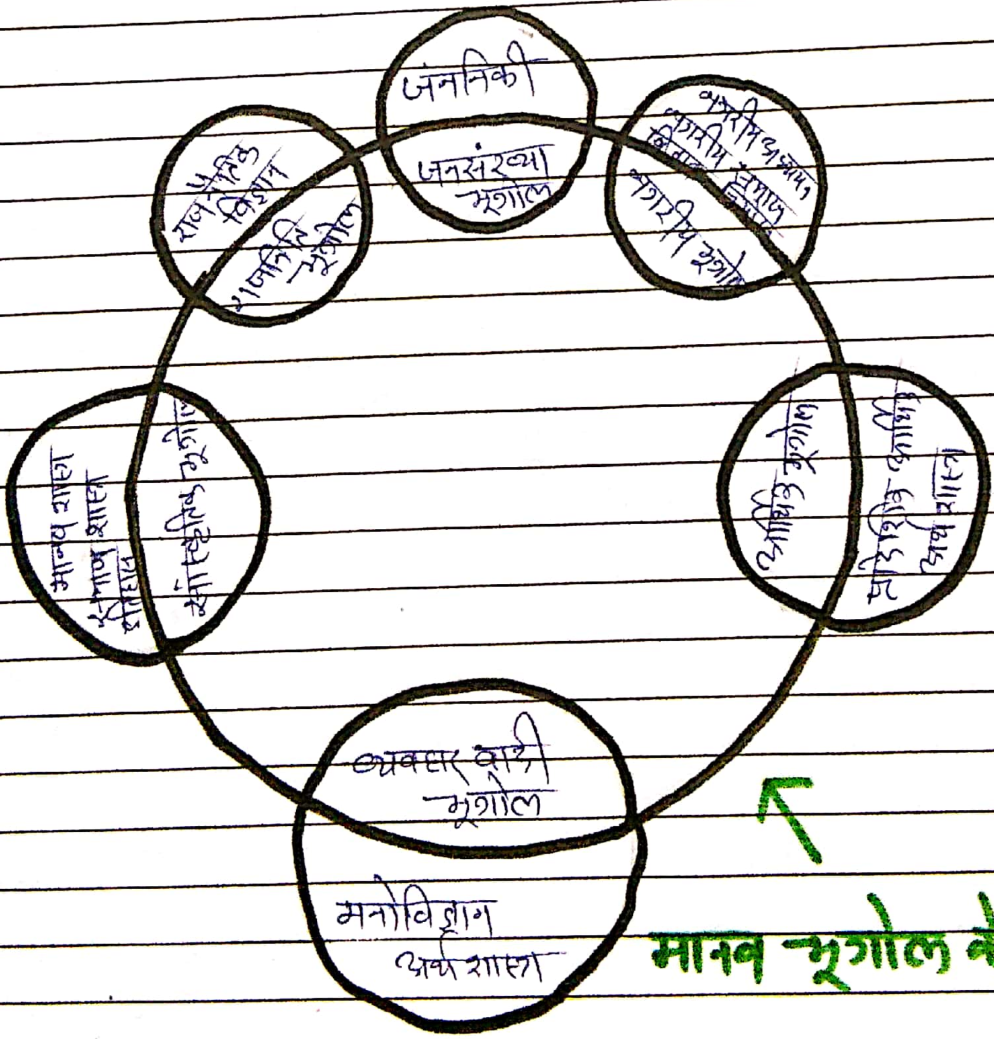

मानव भूगोल के उपक्षेत्र